E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(4): 567-571
Received: 12-09-2020
Accepted: 14-10-2020

तुफान सिंह पारधी
पी. एच. डी. सूचना एवं भाषा अभियांत्रिकी केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

डॉ. हर्षलता पेटकर
सहायक प्राध्यापक, सूचना एवं भाषा अभियांत्रिकी केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

Corresponding Author:
तुफान सिंह पारधी
पी. एच. डी. सूचना एवं भाषा अभियांत्रिकी केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

पवारी व्युत्पादक रुपिमिक विश्लेषण

तुफान सिंह पारधी एवं डॉ. हर्षलता पेटकर

सारांश
रुपविज्ञान भाषा विज्ञान की एक ऐसी शाखा है जिसके अंतर्गत शब्दों की आंतरिक संरचना का अध्ययन व विश्लेषण किया जाता है। अनेक भारतीय भाषाओं पर रुपिमिक विश्लेषण पर कार्य हुए हैं लेकिन पवारी पर इस लिए पवारी पर रुपिमिक स्तर पर कार्य करना आवश्यक समझा गया है। इसी क्रम में पवारी रूप वैज्ञानिक स्तर पर एक सक्षम भाषा होने के कारण मूल रूप से अनेकों रूपिम व्युत्पादित करने की क्षमता होती है। प्रयोग की दृष्टि से पवारी में उपलब्ध विविध रूपों के कारण रूपवैज्ञानिक स्तर पर समृद्ध भाषा है। प्रस्तुत शोध पत्र में पवारी के लिए व्यूत्पादक रूपिमिक विश्लेषण केंद्र बिन्दु है। पवारी शब्दों की आंतरिक संरचना को समझते हुए व्युत्पादक रुपिमिक विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण करने पर पता चलता है कि पवारी की शब्द संरचना प्रत्यय, उपसर्ग लगने पर किस प्रकार व्याकरणिक स्तर पर परिवर्तन होते हैं। रूप परिवर्तन की प्रक्रिया को शब्दभेद (संज्ञा, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण) के आधार पर समझा गया है।

कूट शब्द: पवारी, पोवारी, पंवारी, पंवार, भाषा, व्युत्पादक, विश्लेषक, स्वनिक, रूपस्वनिमिक, नियम।

परिचय
पवारी इंडोआर्यन भाषा परिवार की भाषा है जो मालवी का प्रतिरूप मानी जाती है और अन्य संदर्भों के अनुसार बुंदेली की उपबोली के रूप मे जानी जाती है। यह पंवार समाज के द्वारा बोली जाने वाली पंवारों की मातृ भाषा है जिसे पवारी, पोवारी, पंवारी, आदि नामों से संबोधित किया जाता है। यह भाषा मुख्यतः मध्यप्रदेश के बालाघाट, सिवनी, महाराष्ट्र में गोंदिया, नागपूर वर्धा जिलों में अधिकतर बोली जाती है जिसे वैनगंगा तटीय पवारी के नाम से भी जाना जाता है। सेंसस ऑफ इंडिया की 2011 की भाषिक जनगणना के अनुसार पवारी बोलने वालों की संख्या 3,25,772 बताई गई है जो पंवारों की जनसंख्या के अनुसार बहुत कम आकी जाती है। पवारी भाषा के संदर्भ में विद्वानों का मत है कि यह हिंदी के अतिरिक्त मुख्यतः राजस्थानी एवं मालवी का प्रतिरूप है, जिसमें अनेक क्षेत्रों के प्रभाव के कारण मराठी, गुजराती, बघेली, मरारी, राजस्थानी, लोधन्ती, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी तथा साथ-साथ अंग्रेजी के शब्दों का भी मिश्रण प्राप्त होता है। मुख्यतः सबसे अधिक मराठी और हिंदी का प्रभाव है क्योंकि महाराष्ट्र में मराठी और मध्यप्रदेश में हिंदी ने पवारी को अपना शब्द संग्रह प्रदान कर इसे समृद्धशाली बनाया हैं। स्वाभाविक प्रक्रिया है कि किसी भाषा का एक बड़े क्षेत्रफल में पाए जाने पर उसकी शब्द संपदा स्वाभाविक रूप से विस्तृत होती जाती है। पवारी की शब्द संपदा का विस्तार होने के साथ-साथ उसके पुराने मूल शब्द समयांतरल के बाद विलुप्त होते जा रहे हैं जो इस भाषा के अस्तित्व के लिए बहुत बड़ी समस्या है। इस लिए पवारी के शब्दकोश, ध्वनिसंरचना, रूपसंरचना, वाक्य संरचना एवं प्रोक्ति पर कार्य करना आवश्यक है। इन विषयों पर कार्य करने पर पवारी की भाषिक व्यवस्था को समझा संरक्षित किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में पवारी की रूप संरचना पर कार्य किया गया है जिसमें पवारी के व्युत्पादक रूपिमिक विश्लेषण का कार्य किया गया है जिसमें शब्दभेद (संज्ञा, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण) के आधार पर विश्लेषण कर परिणाम प्राप्त किए गए हैं। विश्लेषण करने पर व्युत्पादक नियमों का भी निष्पादन किया गया है। विश्लेषण करने के अंतराल मूल शब्द में प्रत्ययों के लगने पर होने वाले परिवर्तनों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

व्यूत्पादक रुपिमिक विश्लेषण: रुपिम विज्ञान भाषाविज्ञान की वह शाखा है जिसमें भाषा की लघुत्तम अर्थवान इकाई का विश्लेषण किया जाता है। रुपिम विज्ञान के दो प्रकार है पहला मुक्त रुपिम दूसरा बद्ध रुपिम, बद्ध रुपिम के अंतर्गत मुख्यतः रुपसाधक और व्युत्पादक रुपिम आते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में पवारी का व्युत्पादक रुपिम का विश्लेषण किया गया है। एक रुपिम से दूसरा रुपिम बनाने की प्रक्रिया में मूल शब्द के साथ प्रत्ययों के लगने पर मूल शब्द का अर्थ बदलता है उसके साथ-साथ उसका व्याकरणिक अर्थ भी बदलता रहता है, व्युत्पादक रुपिम कहलाते हैं। व्युत्पादक रुपिम के अंतर्गत पवारी रुपिमों का विभिन्न स्तर पर विश्लेषण किया गया है, जिसमें शब्दभेद के आधार पर रुपिमिक परिवर्तन प्राप्त होते हैं। जैसे कि संज्ञा से संज्ञा, संज्ञा से विशेषण, संज्ञा से क्रिया, संज्ञा से क्रियाविशेषण उसी प्रकार से विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण का भी विश्लेषण उदाहरणों की उपलब्धता के अनुसार विश्लेषित किया गया है। रुपिमिक विश्लेषण के साथ व्युत्पन्न होने में गठन की प्रक्रिया किस प्रकार कार्य करती है यह नियम द्वारा समझाया गया है। नियमों से प्राप्त प्रत्यय और मूल रूप से जुड़ने पर होने परिवर्तन के

रूप में स्वनिमिक परिवर्तन, रूपस्वनिमिक परिवर्तन, एवं दोनों रूपों में परिवर्तन न होना। रूप परिवर्तन की प्रक्रिया में यह तीन प्रकार के परिवर्तन देखने को मिलते हैं। रूप परिवर्तन की प्रक्रिया में कुछ प्रत्यय के लगने पर केवल स्वनिक परिवर्तन होता है, कुछ के लगने पर रूप रूप स्वनिमिक परिवर्तन होता है, तो कुछ प्रत्यय के लगने पर केवल रूपस्वनिमिक परिवर्तन होता है एवं कुछ प्रत्यय लगने पर रूप परिवर्तन नहीं होता है लेकिन अनेक ऐसे भी प्रत्यय है जिनके साथ लगने पर किसी प्रत्यय में तीनों प्रकार के परिवर्तन तथा कुछ प्रत्ययों से स्वनिक और रूपस्वनिमिक परिवर्तन होते हैं। इस प्रकार से प्रत्ययों के लगने पर परिवर्तन की प्रक्रिया स्वतः निरंतर चलती रहती है।

विश्लेषण: विश्लेषित किए गए डाटा को निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा समझा गया है जिसमें नियम के माध्यम से पवारी शब्दों का शब्दभेद के आधार पर रूपों के गठन की प्रक्रिया को समझाने का प्रयास किया गया है तथा कुछ विश्लेषणों की व्याख्या भी की गई है।

संज्ञा से संज्ञा बनने वाले शब्द:

नियम: जब आकारांत और अकारांत प्रातिपदिक के साथ 'ई' प्रत्यय लगता है तब रूपस्वनिमिक परिवर्तन होने पर 'ई' 'ी' की मात्रा में परिवर्तित हो जाती है।

तालिका 1

क्रमांक	मूल शब्द संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पादित शब्द संज्ञा
1.	बटका	ई	बटकी
2.	मेंडका	ई	मेंडकी

दी गई तालिका -1 में उदाहरणों में मूल शब्द के साथ 'ई' पर प्रत्यय लगता है तब व्युत्पादित शब्द संज्ञा प्राप्त होता है तथा यह प्रत्यय स्त्रीवची प्रत्यय के रूप में कार्य करता है।

नियम: जब अकारांत प्रातिपदिक के साथ 'आनो' प्रत्यय लगता है तब स्वनिक परिवर्तन होने पर 'आ' 'ा' की मात्रा में परिवर्तित हो जाता है।

तालिका 2

क्रमांक	मूल शब्द संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पादित शब्द संज्ञा
1	घर	आनो	घरानो

दी गई तालिका - 2 में 'आनो' प्रत्यय घर से संबंधित कुटूंबियों को संबोधित करता है।

संज्ञा से विशेषण बनने वाले शब्द

नियम: जब अकारांत/आकारांत प्रातिपदिक के साथ 'आड्या' प्रत्यय जुड़ने परस्वनिक एवं रूपस्वनिमिक परिवर्तन होता है तब 'आ' 'ा' की मात्रा में परिवर्तित हो जाता है।

तालिका 3

क्रमांक	मूल शब्द संज्ञा	परप्रत्यय	व्यूत्पादित शब्द विशेषण
1.	गोटा	आड्या	गोटाड्या
2.	टोंड	आड्या	टोंडाड्या

दी गई तालिका - 3 में स्पष्ट है कि 'आड्या' प्रत्यय जुड़ने पर विशेषण रूप ही प्राप्त होता है।

नियम: जब अकारांत प्रातिपदिक के साथ 'ओं' प्रत्यय लगता है तब स्वनिक परिवर्तन होने पर 'ओ' 'ो' की मात्रा में परिवर्तित हो जाती है।

तालिका 4

क्रमांक	मूल शब्द संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पादित शब्द विशेषण
	ताहान	ओं	ताहानों

तालिका क्रमांक मूल शब्द संज्ञा के साथ 'ओं' प्रत्यय लगता है तब बनने वाला रुपिम विशेषण कहलाता है जो मूल शब्द की विशेषता बताने का कार्य करता है।

संज्ञा से क्रिया बनने वाले शब्द

नियम: जब अकारांत प्रातिपदिक के साथ 'यो' प्रत्यय लगता है तब स्वनिक परिवर्तन होने पर मूल शब्द के अंतिम वर्ण को अर्ध कर देता है।

तालिका 5

क्रमांक	मूल शब्द संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पादित शब्द क्रिया
1.	बस	यो	बस्यो
2.	नाच	यो	नाच्यो

उपरयुक्त तालिका में मूल शब्द क्रिया वाचक संज्ञा के रूप में कार्य करते हैं जिनमें प्रत्यय लागने पर क्रियारूप में परिवर्तित हो जाता है।

संज्ञा से क्रियाविशेषण बनने वाले शब्द

नियम:: जब अकारांत प्रातिपदिक के साथ 'ई' प्रत्यय लगता है तब 'ई' 'ी' की मात्रा मे परिवर्तित हो जाती है।

तालिका 6

क्रमांक	मूल शब्द संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पादित शब्द क्रियाविशेषण
1.	सकार	ई	सकारी

तालिका क्रमांक- में मूल शब्द संज्ञा के साथ 'ई' परप्रत्यय जुड़ता है तब क्रियाविशेषण बनता है जिसमें सकार का हिंदी अर्थ सुबह और सकारी का अर्थ अगला दिन होता है।

विशेषण से संज्ञा बनने वाले शब्द

नियम: जब अकारांत प्रातिपदिक के साथ 'पन 'प्रत्यय जुडता है तब इनमें रूपपरिवर्तन नहीं होता है अर्थात प्रत्यय और मूल शब्द में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

तालिका 7

क्रमांक	मूल शब्द विशेषण	परप्रत्यय	व्यूत्पादित शब्द संज्ञा
1.	बाटरो	पन	बाटरोपन
2.	कारो	पन	कारोपन
3.	हीवरो	पन	हीवरोपन

नियम: जब अकारांत प्रातिपदिक के साथ 'आ' प्रत्यय जुड़ता है तब स्वनिक परिवर्तन होने पर 'आ' 'ा' की मात्रा में परिवर्तित हो जाता है।

तालिका 8

क्रमांक	मूल शब्द विशेषण	परप्रत्यय	व्यूत्पादित शब्द संज्ञा
1.	झोल	आ	झोला
2.	गोल	आ	गोला

विशेषण से विशेषण बनने वाले शब्द

नियम: जब ओकारांत प्रातिपदिक के साथ 'ई' प्रत्यय आता है तब स्वनिक परिवर्तन 'ई' 'ी' की मात्रा में परिवर्तित हो जाता है।

तालिका 9

क्रमांक	मूल शब्द विशेषण	परप्रत्यय	व्यूत्पादित शब्द विशेषण
1.	मोठो	ई	मोठी
2.	नहानो	ई	नहानी
3.	कारो	ई	कारी

दी गई तालिका में व्युत्पन्न योग संबंध वाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न करते हैं। इसमें 'ओ' का विकार पाया गया है।

विशेषण से क्रियाविशेषण बनने वाले शब्द

नियम: जब अकारांत प्रातिपदिक के साथ 'अच' प्रत्यय जुड़ता है तब स्वनिक परिवर्तन होने पर 'अ' का लोप हो जाता है।

तालिका 11

क्रमांक	मूल शब्द विशेषण	परप्रत्यय	व्यूत्पादित शब्द क्रिया विशेषण
1.	साजरो	अच	साजरोच
2.	नवो	अच	नवोच
3.	जूनो	अच	जुनोच

दी गई तालिका में मूल शब्द विशेषण के साथ 'अच' प्रत्यय जुड़ने पर व्यूत्पादित रुपिम के रूप में क्रिया विशेषण ही प्राप्त होता है।

क्रिया से संज्ञा बनने वाले शब्द

नियम: जब अकारांत धातु के साथ 'अकी' प्रत्यय जुड़ता है तब स्वनिक परिवर्तन होने पर 'अ' का विकार हो जाता है।

तालिका 12

क्रमांक	मूल शब्द क्रिया	परप्रत्यय	व्यूत्पादित शब्द संज्ञा
1.	मीच	अकी	मिचकी
2.	हुचक	अकी	हुचकी

नियम: जब अकारांत धातु के साथ 'अन' प्रत्यय जुड़ता है तब स्वनिक परिवर्तन होने पर 'अ' का विकार हो जाता है।

तालिका 13

क्रमांक	मूल शब्द क्रिया	परप्रत्यय	व्यूत्पादित शब्द संज्ञा
1.	तप	अन	तपन

नियम: जब अकारांत धातु के साथ 'यल' प्रत्यय लगते हैं तब मूल शब्द और प्रत्यय में कोई परिवर्तन नहीं होता है। यदि 'यल' इकारांत के साथ प्रयुक्त होता है तब कुछ शब्दों के साथ जुड़ने पर परिवर्तन नहीं होता है तथा कुछ के साथ लगने पर रूपस्वनिमिक परिवर्तन होता है।

तालिका 14

क्रमांक	मूल शब्द क्रिया	परप्रत्यय	व्यूत्पादित शब्द विशेषण
1.	सड़	यल	सड़यल
2.	मर	यल	मरयल
3.	दाढ़ी	यल	दढ़याल

नियम: जब अकारांत धातु के साथ 'यो' प्रत्यय लगता है तब प्रत्यय में तो कोई परिवर्तन नहीं होता लेकिन 'यो' प्रत्यय से जुड़ने वाला वर्ण अर्ध रूप ले लेता है जैसे 'स' का 'स्' तथा 'ख' का 'ख्' में परिवर्तन होना।

तालिका 16

क्रमांक	मूल शब्द क्रिया	परप्रत्यय	व्यूत्पादित शब्द क्रिया
1.	नाच	यो	बस्यो
2.	हिंड	यो	हिंड्यो
3.	हिट	यो	हिट्यो

क्रिया से क्रियाविशेषण बनने वाले शब्द

नियम: जब अकारांत धातु के साथ 'अत' प्रत्यय लगता है तब मूल शब्द और प्रत्यय में कोई स्वनिक परिवर्तन होने पर अत में से 'अ' का लोप हो जाता है।

तालिका 17

क्रमांक	मूल शब्द क्रिया	परप्रत्यय	व्यूत्पादित शब्द क्रियाविशेषण
1.	चाल	अत	चलत
2.	दर	अत	दरत
3.	धोव	अत	धोवत
4.	नाच	अत	नाचत

क्रिया विशेषण से संज्ञा बनने वाले रुपिम

नियम: जब अकारांत प्रातिपदिक के साथ 'गार', प्रत्यय जुड़ता है तब इनमें रूपस्वनिमिक परिवर्तन नहीं होता है।

तालिका18

क्रमांक	मूल शब्द क्रिया विशेषण	परप्रत्यय	व्यूत्पादित शब्द संज्ञा
1.	रोज	गार	रोजगार

क्रिया विशेषण से विशेषण बनने वाले रुपिम

नियम: जब अकारांत प्रातिपदिक के साथ 'ई' प्रत्यय जुड़ता है तब 'ई' 'ी' की मात्रा में परिवर्तित हो जाती है।

तालिका 19

क्रमांक	मूल शब्द क्रिया विशेषण	परप्रत्यय	व्यूत्पादित शब्द विशेषण
1.	अटपट	ई	अटपटी
2.	बाहेर	ई	बाहेरी

क्रिया विशेषण से क्रिया व्युत्पादित शब्द

नियम: जब अकारांत प्रातिपदिक के साथ आय प्रत्यय जुड़ता है तब 'आ' ा' की मात्रा में परिवर्तित हो जाता है।

तालिका 20

क्रमांक	मूल शब्द क्रिया विशेषण	परप्रत्यय	व्यूत्पादित शब्द क्रिया
1.	लक़लक	आय	लक़लकाय
2.	फड़फड़	आय	फड़फड़ाय
3.	तनतन	आय	तनतनाय
4.	चुनचुन	आय	चुनचुनाय

क्रियाविशेषण से क्रियाविशेषण बनने वाले शब्द

नियम: जब अकारांत प्रातिपदिक के साथ आय प्रत्यय जुड़ता है तब स्वनिक परिवर्तन होने पर 'अ' का लोप हो जाता है।

तालिका 21

क्रमांक	मूल शब्द क्रिया विशेषण	परप्रत्यय	व्यूत्पादित शब्द क्रिया
	भुरभुरो	अच	भुरभुरोच
	फरफरो	अच	फरफरोच
	खुलखुलो	अच	खुलखुलोच

- **निष्कर्ष:** प्रस्तुत शोध पत्र में किए गए विश्लेषण में निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पवारी रुपिमिक स्तर पर स्मृद्ध भाषा है जिसके मूल शब्दों प्रत्ययों के जुड़ने पर रूप परिवर्तन होते रहते हैं। रुपिमिक विश्लेषण करने पर पता चलता है कि प्रत्ययों के लगने पर मूल रूप में किस प्रकार अर्थ परिवर्तन होता है तथा व्याकरणिक सूचना कैसे परिवर्तित होती है विश्लेषण से पता चलता है। विश्लेषण में यह भी पाया गया कि संज्ञा से संज्ञा संज्ञा, से विशेषण, संज्ञा से क्रिया, संज्ञा से क्रियाविशेषण के रूप में परिवर्तन देखने को मिलता है उसी क्रम में विशेषण, क्रिया, एवं क्रिया विशेषण के साथ प्रत्यय जुड़ने पर लागू होता है। विश्लेषण में पाया गया कि मूल शब्दों के साथ परप्रत्यय जुड़ने पर रूप परिवर्तन होते हैं जिसमें स्वनिक परिवर्तन, रूप स्वनिमिक परिवर्तन, और परिवर्तन न होना। इस प्रकार से रूप परिवर्तन होते रहते हैं। इस रूप परीवर्तन की प्रक्रिया में प्रत्ययों की मुख्य भूमिका पायी गई है उनके साथ मूल शब्द के जुड़ने की प्रक्रिया को नियमों के माध्यम से समझाया गया है।

संदर्भ सूची

1. Desai S, Pawar J, Bhattachary P. Automated Paradigm Selection for FSA based Konkani Verb Morphological Analyzer, Proceedings of COLING 2012: Demonstration Papers Coling, 2012 Dec, 103-110.
2. Dixit V, Dethe S, Joshi RK. Design and Implementation of a Morphology-based Spell Checker for Marathi an Indian Language Archives of Control Sciences. 2014;15(3):309-316.
3. Gawade P, Madhavi D, Gaikwad J, Jadhav S, Ambekar R. Natural Language Processing Tasks for Marathi Language, International Journal of Engineering Research and Applications (IJERA). 2013 Mar-Apr;3(2):322-326. ISSN: 2248-9622.
4. Humayon M, Ranta A. Developing Punjabi Morphology, Corpus and Lexicon, PACLIC 24 Proceedings, 2010, 163-172.
5. Jha GN, Agrawal M, Mishra S, Mani D, Mishra D, Bhadra M, *et al*. Inflectional Morphology Analyzer for Sanskrit, Sanskrit CL. 2007, 219-238.
6. Joseph J, Anto B. Rule Based Morphological Analyzer for Malayalam Nouns: Computational Analysis of Malayalam Linguistics, International Journal of Innovative Research in Computer and Communication Engineering (An ISO 3297: 2007 Certified Organization), 2015 Oct, 67-72.
7. Kalita NJ, Saharia N, Sinha SK. Morphological Analysis of the Bishnupriya Manipuri Language using Finite State Transducers, 15th International Conference on Intelligent Text Processing and Computational Linguistics (CICLING-2014, Springer LNCS 8403), 2014.
8. Kanuparthi N, Inumella A, Sharma D. Hindi Derivational Morphological Analyzer, (SIGMORPHON2012), Association for Computational Linguistics, 2012 Jun 7, 10-16.
9. Utkarsh Kapadia, Apurva Desai. Rule Based Gujarati Morphological Analyzer, International Journal of Computer Science ISSN (Print): 1694-0814 | ISSN (Online). 2017 Mar;14(2):1694-0784. DOI:10.20943/01201702.3035.
10. Kapadia N, Desai A. Morphological Rule Set and Lexicon of Gujarati Grammar: A Linguistics Approach, Journal of Science and Technology, ISSN: 0975-5446. 2015 Jul;4(1):127-133.
11. Khadtare PA, Raut S, Otari M. Morphological Disambiguator for Marathi using NLP, International Journal of scientific research and management, ISSN (e):2321-3418, Pages 3230-3233 ISSN (e): 2321-3418, 2015, 3(6).
12. Khan M, Mamidi R, Shah U. Morphological Analyzer for Kashmiri, The Linguistic Society of India Platinum Jubilee Conference, University of Hyderabad, India, 2005 Dec, 6-8.
13. Kuncham P, Raghavi C, Nelakudditi K, Sharma D. Domain Adaptation in Morphological Analysis, International Journal of Languages, Literature and Linguistics, 2015, 127-130.
14. Malladi D, Mannem P. Context Based Statistical Morphological Analyzer and its Effect on Hindi Dependency Parsing, Proceedings of the Fourth Workshop on Statistical Parsing of Morphologically Rich Languages, Seattle, Washington, USA, Association for Computational Linguistics, 2013 Oct 18, 119-128.
15. टेंभरे, ज्ञानेश्वर. पवारी ज्ञानदीप. मुम्बई: हिमालया: पब्लिशिंग हाउस 2011.
16. कुलकर्णी, सु.बा. पोवारी बोली. नागपूर विद्यापीठ 1974.
17. पटले जयपालसिंह. पवार गाथा. नागपूर: मयूर आर्ट्स 2006.
18. पटले जयपालसिंह. पोवारी गीत-गंगा. नागपूर: मयूर आर्ट्स 2010.
19. पटले जयपालसिंह. पोवारी मायबोली अमर रह्वो. नागपूर: मयूर आर्ट्स 2010.
20. पटले जयपालसिंह. गीत रामायण. नागपूर: मयूर आर्ट्स 2012.
21. पटले जयपालसिंह. श्रीमद् भागवत गीता सार पोवारी संस्करण. नागपूर: मयूर आर्ट्स 2014.
22. पटले सी. एच. काव्य-मंजरी पवारी/पोवारी मायबोली संस्कारण. कृष्णवाटिका प्रकाशन, नागपुर 2021.
23. अग्रवाल अर्चना. संस्कृत भाषाविज्ञान. नई दिल्ली: ओमेगा पब्लिकेशन 2017.
24. उत्प्रेती मुरारीलाल. हिन्दी में प्रत्यय एवं पश्चाश्रयी-विचार. दिल्ली: आलेख प्रकाशन 2009.
25. कपूर बदरीनाथ. हिंदी व्याकरण की सरल पद्धति. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन 2001.
26. कुमार रंजीत. शोध कार्यप्रणाली. 2017. New Delhi: SAGEPublication
27. गुरु कामताप्रसाद. हिंदी व्याकरण. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान 2012.
28. तिवारी भोलानाथ, बाला किरण. हिंदी भाषा की रूप-रचना. दिल्ली: साहित्य सहकार 2009.
29. तिवारी भोलानाथ, बाला किरण. हिंदी भाषा की शब्द-संरचना. दिल्ली: साहित्य सहाकर 2009.
30. दास श्यामसुंदर. भाषाविज्ञान. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान 2011.
31. देशमुख सुरेश. भोयरी संस्कृति. नागपूर: क्वालिटी कार्ड 2021.
32. पट्टनायक कैलाश, त्रिपाठी अरिमर्दन कुमार. आकांक्षी भारतीय भाषा एवं संस्कृति एक विमर्श. नई दिल्ली: द मार्जिनलाइज्ड पब्लिकेशन 2018.
33. बोरा राजमल. भाषाविज्ञान [स्वरूप, सिद्धांत और अनुप्रयोग]. नोएडा: मयूर पेपरबैक्स 2001.

34. रस्तोगी कविता. समसामयिक भाषाविज्ञान. लखनऊ: सुलभ प्रकाशन 2000.
35. रस्तोगी कविता. समसामयिक अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान. दिल्ली: अविराम प्रकाशन 2012.
36. शर्मा राजमणि. आधुनिक भाषाविज्ञान. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन 2009.
37. शर्मा रामकिशोर. आधुनिक भाषाविज्ञान के सिद्धांत. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन 2005.
38. श्रीवास्तव रविन्द्रनाथ, गोस्वामी कृष्णकुमार. अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ. दिल्ली: आलेख प्रकाशन 2009.
39. सकलानी प्रेमस्वरूप. भाषाविज्ञान परिभाषा-कोश-I. नई दिल्ली: वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग 1990.
40. सकलानी प्रेमस्वरूप. भाषाविज्ञान परिभाषा-कोश-II. नई दिल्ली: वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग 1997.
41. शर्मा रामविलास. भारत की भाषा समस्या: राजकमल प्रकाशन 2017.
42. आप्टे वामन शिवराम. संस्कृत – हिंदी शब्दकोश: कमल प्रकाशन नई दिल्ली 1890.
43. तिवारी उदयनारायण. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास: लोकभारती प्रकाशन 2019.